SANKARA'S CONCEPTION OF THE ABSOLUTE

शंकर - ब्रह्मविचार ।

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan

(For Part- 1 Hons./Subs. Students)

शंकर ब्रह्म को ही एक मात्र सत्य मानने के कारण एकतत्ववादी हैं।उनके अनुसार ब्रह्म को छोड़कर सभी वस्तुएँ जैसे -जगत, ईश्वर आदि मिथ्या हैं।शंकर ने व्यावहारिक दृष्टि से जगत को सत्य माना है और ब्रह्म को इसका मूल कारण जिसे सृष्टिकर्ता, पालक, संहारक,सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान कहा जा सकता है।इसी रूप में उसे ईश्वर या सगुण ब्रह्म भी कहा जाता है।

शंकर के अनुसार ब्रह्म का साक्षात्कार ही चरम लक्ष्य है।वह सर्वोच्च ज्ञान है।ब्रह्म-ज्ञान से संसार का ज्ञान जो मूलतः अज्ञान है समाप्त हो जाता है।ब्रह्म अनन्त सर्वव्यापी तथा सर्वशक्तिमान है।वह भूत जगत का आधार है।जगत ब्रह्म का विवर्त है परिणाम नहीं।इस विवर्त से ब्रह्म पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार एक जादूगर अपने ही जादू से ठगा नहीं जाता।शंकर का ऐसा मानना है कि सामान्य अनुभव के आधार पर भी यह समझा जा सकता है कि ब्रह्म कैसे जगत में व्याप्त भी है और इससे परे भी।जगत जबतक भासित होता है तबतक वह एकमात्र सत्ता-ब्रह्म के ही आश्रित रहता है, जैसे - जैसे रस्सी में आभासित साँप उस रस्सी के अलावे और कहीं नहीं रहता।परंतु जिस तरह उसी रस्सी में सर्पत्व की भ्रांति के कारण कोई विकार नहीं आता अथवा जिस तरह नाटक के पात्र को राज्य की प्राप्ति या नाश से कोई यथार्थ लाभ-हानि नहीं होती, उसी जगत के सुख-दुःख, पाप-पुण्यादि विषयों से ब्रह्म प्रभावित नहीं होता।

परमार्थिक दृष्टि से जगत या जीव के गुण ब्रह्म में आरोपित नहीं किये जा सकते।वह सजातीय, विजातीय और स्वगत, सभी भेदों से रहित है।यहाँ शंकर का रामानुज से भेद पड़ता है।रामानुज ब्रह्म में स्वगत भेद मानते हैं क्योंकि ब्रह्म में चित(Conscious)और अचित(Unconscious)ये दोनों तत्व विद्यमान रहते हैं।शंकर का का यह विचार है कि विश्वातीत रूप में ब्रह्म सर्व उपाधियों से रहित है।अतः वे परब्रह्म को निर्गुण ब्रह्म मानते हैं।

शंकर ने ब्रह्मा को अनिर्वचनीय माना है। ब्रह्म को शब्दों के द्वारा प्रकाशित करना असंभव है। ब्रह्म को भावात्मक रूप से जानना भी संभव नहीं है। हम यह नहीं जान सकते की ब्रह्म क्या है अपितु हम यह जान पाते हैं कि ब्रह्म क्या नहीं है। उपनिषद में ब्रह्म को 'नेति नेति' अर्थात यह नहीं है कह कर वर्णन किया गया है। शंकर उपनिषद के नेति-नेति विचार के आधार पर ही ब्रह्म की व्याख्या करते हैं। नेति-नेति का शंकर के दर्शन

में इतना प्रभाव है कि यह ब्रह्म को एक कहने के बजाय अद्वैत कहते हैं। ब्रह्म की व्याख्या निषेधात्मक रूप से की जाती है। ब्रह्म को अनिर्वचनीय कहने का यह अर्थ नहीं है कि वह अगेंय है। ब्रह्म की अनुभूति होती है।इस प्रकार ब्रह्म निर्गुण,निर्विशेष और निराकार है।

शंकर ने ब्रह्म के निषेधात्मक व्याख्या के अतिरिक्त भावात्मक व्याख्या भी किया है।वह सत्य है जिसका अर्थ है कि वह असत्य नहीं है वह चित है जिसका अर्थ है वह अचित नहीं है। वह आनंद है जिसका अर्थ है कि वह दुख स्वरूप नहीं है। इस प्रकार ब्रह्म सत+ चित+ आनंद = अर्थात सच्चिदानंद है। सत चित और आनंद में अवियोज्य संबंध है जिसके फलस्वरूप तीन मिलकर एक ही सत्ता का निर्माण करते हैं ।